2. घमंड का फल

एक समय था जब भौंरा इन्द्रधनुषी रंग का था। देखने में चित्ताकर्षक।

भौंरे को अपने रूप का अभिमान हो चला। वह दूसरों को नीचा दिखाने में न चूकता। एक दिन तितलियों से कहा : 'तुम्हारे पंख काले, चितकबरे और कितने ही रंगों के मिश्रण से भद्दे लगते हैं। देखो, मेरा इन्द्रधनुषी रंग कितना प्यारा है! तुम सब गूँगी हो, पर मेरा कितना मधुर कंठ है और मेरी वाणी कितनी मधुर है!'

भौंरा मीठे-मीठे उलाहने देकर उड़ जाता। तितलियाँ उदास हो जातीं।

एक दिन भौंरे ने तालाब में खिले कमल से कहा : 'तुम अपने को फूलों का राजा कहते हो, मगर गुलाब कहता है कि फूलों का राजा मैं हूँ। वह ठीक ही कहता है कि तुम्हारा जन्म कीचड़ से हुआ है, अतः तुम फूलों में श्रेष्ठ नहीं हो सकते।'

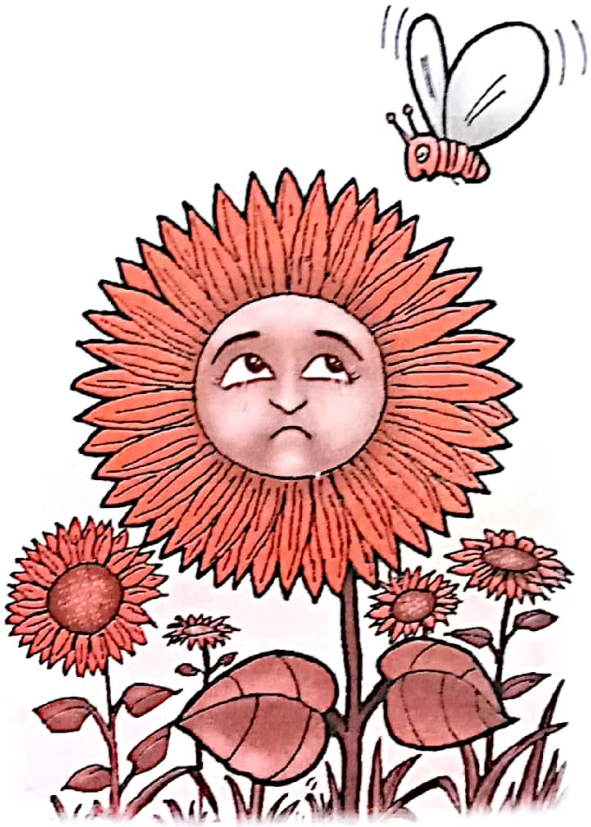

कमल का हृदय दुःखित कर भौंरा उड़ जाता और सूर्यमुखी के ऊपर मँड़राने लगता। वह रजनीगंधा की प्रशंसा करता हुआ सूर्यमुखी को नीचा दिखाता। इसी तरह कभी चंपा को चमेली के विरुद्ध भड़काता तो कभी कटहरी चंपा को हरसिंगार के विरुद्ध।

भौंरे की चाल से बाग के फूल उदास रहने लगे।

एक दिन फूलों ने सभा की और धतूरे को अगुआ बनाया। धतूरे का फूल

Scanned by CamScanner

महादेव को बड़ा प्रिय है, अतः वह सब फूलों के साथ महादेव के दरबार में पहुँच गया। महादेव ने सारी बातें सुनकर भौंरे को बुलाया और उससे स्पष्टीकरण माँगा। भौंरे ने अपना दोष स्वीकारा।

महादेव ने उसी समय उसका सुंदर रूप ले लिया और उसे काला कुरूप दे दिया। उसका मधुर कंठ भी ले लिया।

भौंरे का घमंड चूर-चूर हो गया। उसे ज्ञात हुआ कि घमंड का फल बुरा होता है।

• शब्दार्थ •

• शब्दार्थ •

इन्द्रधनुषी = इन्द्रधनुष के विभिन्न रंगों से युक्त

चित्ताकर्षक = चित्त को आकर्षित करनेवाला

स्वीकारा = स्वीकार किया, कबूल किया

कुरूप = भद्दा, जो देखने में अच्छा न हो

स्पष्टीकरण = स्पष्ट करने की क्रिया

उलाहना = शिकायत

ज्ञात = मालूम

Scanned by CamScanner